

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 19 August 2026

सऊदी-पाक करार से भारत के लिए नई चुनौतियां, क्या बदलेगा एशिया का समीकरण ?

Publisher

Published on 27 Sep 2025



सऊदी अरब और पाकिस्तान ने हाल ही में एक अहम **रक्षा समझौते** पर हस्ताक्षर किए हैं। इस करार ने वैश्विक राजनीति और एशियाई सुरक्षा ढांचे में नए सवाल खड़े कर दिए हैं। भारत के लिए यह स्थिति न सिर्फ चुनौतीपूर्ण है, बल्कि आने वाले समय में इसके रणनीतिक और कूटनीतिक नतीजे भी देखने को मिल सकते हैं।

यह करार ऐसे समय में हुआ है जब मध्य पूर्व पहले से ही उथल-पुथल के दौर से गुजर रहा है। कतर पर इजरायल के हमले, अमेरिका पर घटते भरोसे और सऊदी अरब की सुरक्षा चिंताओं ने इस समीकरण को और जटिल बना दिया है।

सऊदी-पाक समझौते की अहमियत

इस रक्षा करार के तहत पाकिस्तान और सऊदी अरब रक्षा सहयोग को मजबूत करेंगे। इसमें सैन्य प्रशिक्षण, तकनीकी सहयोग और खुफिया जानकारी साझा करने जैसे मुद्दे शामिल हैं।

- **पाकिस्तान के लिए फायदा :**

पाकिस्तान लंबे समय से आर्थिक संकट से जूझ रहा है। सऊदी अरब के साथ मजबूत रक्षा संबंध उसे आर्थिक और कूटनीतिक सहारा देंगे।

- **सऊदी अरब के लिए महत्व :**

सऊदी अरब को अपनी सुरक्षा को लेकर चिंता है। इजरायल और ईरान के बीच तनाव के बीच वह नए सुरक्षा साझेदार तलाश रहा है। पाकिस्तान के साथ करार उसी दिशा में एक कदम है।

भारत के लिए क्यों चुनौती है यह करार ?

भारत और सऊदी अरब के बीच हाल के वर्षों में ऊर्जा, व्यापार और निवेश के क्षेत्र में रिश्ते मजबूत हुए हैं। लेकिन पाकिस्तान के

साथ यह नया रक्षा करार भारत की रणनीतिक चिंताओं को बढ़ा सकता है।

1. रक्षा सहयोग का असर :

अगर पाकिस्तान को सऊदी अरब से आधुनिक हथियार या वित्तीय सहायता मिलती है, तो इसका इस्तेमाल भारत के खिलाफ भी हो सकता है।

2. कूटनीतिक संतुलन पर दबाव :

भारत के लिए सऊदी अरब एक महत्वपूर्ण ऊर्जा साझेदार है। लेकिन पाकिस्तान के साथ करीबी बढ़ने से भारत को नए संतुलन बनाने होंगे।

3. मध्य एशिया और खाड़ी क्षेत्र पर असर :

भारत खाड़ी देशों में मजबूत आर्थिक और प्रवासी संबंध रखता है। पाकिस्तान और सऊदी की बढ़ती नजदीकी भारत की स्थिति कमजोर कर सकती है।

अमेरिका पर भरोसा क्यों घटा ?

सऊदी अरब लंबे समय से अमेरिका का करीबी सहयोगी रहा है। लेकिन कतर पर इजरायल के हमले और अमेरिका की प्रतिक्रिया ने सऊदी अरब का भरोसा हिला दिया।

अब सऊदी अरब नए साझेदारों की तलाश कर रहा है, ताकि सुरक्षा के मोर्चे पर वह किसी एक देश पर निर्भर न रहे। पाकिस्तान को चुनना इसी रणनीति का हिस्सा है।

चीन की भूमिका भी अहम

इस पूरे समीकरण में **चीन की भूमिका** को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। चीन पाकिस्तान का सबसे बड़ा रक्षा सहयोगी है। सऊदी अरब भी चीन के साथ आर्थिक साझेदारी को मजबूत कर रहा है। ऐसे में यह करार एशिया में चीन के प्रभाव को और बढ़ा सकता है।

भारत के लिए यह स्थिति चिंताजनक है क्योंकि इससे उसका सामरिक दबाव और बढ़ सकता है।

भारत के लिए विकल्प क्या है ?

इस चुनौतीपूर्ण स्थिति में भारत को बहुस्तरीय रणनीति अपनानी होगी।

1. सऊदी अरब से रिश्ते मजबूत करना :

भारत को ऊर्जा, निवेश और व्यापार के मोर्चे पर सऊदी अरब से अपने संबंध और गहरे करने होंगे।

2. अन्य खाड़ी देशों से सहयोग :

कतर, यूएई और ओमान जैसे देशों से संबंध मजबूत करना भारत के लिए जरूरी होगा, ताकि क्षेत्रीय संतुलन बनाया जा सके।

3. वैश्विक कूटनीति :

अमेरिका, यूरोप और एशियाई देशों के साथ मिलकर भारत को ऐसा कूटनीतिक माहौल बनाना होगा, जिससे पाकिस्तान की चालबाजियों का असर कम हो सके।

सऊदी अरब और पाकिस्तान के बीच हुआ रक्षा करार केवल एक द्विपक्षीय समझौता नहीं है। यह एशिया की राजनीति और वैश्विक शक्ति संतुलन में बदलाव का संकेत है। भारत के लिए यह स्थिति न केवल चुनौतीपूर्ण है बल्कि उसकी विदेश नीति और रक्षा रणनीति की परीक्षा भी है।

अब देखना यह होगा कि भारत इस नई चुनौती का सामना किस तरह करता है और खाड़ी देशों के साथ अपने रिश्तों को कैसे संतुलित करता है।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsoever.